भावार्थ पाठ 6 - 'संगतकार' (मंगलेश डबराल)
कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 1

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज़ सुंन्दर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार

भावार्थ

प्रस्तुत कविता में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्व पर विचार किया गया है। नाटक, फिल्म, संगीत, नृत्य आदि के अलावा समाज और इतिहास में भी अनेक ऐसे प्रसंग हुए हैं, जहाँ नायक की सफलता में अनेक लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए कवि कहता है कि मुख्य गायक के गांभीर और दमदार स्वर का साथ देती हुई एक मधुर, कमज़ोर और काँपती हुई-सी आवाज सुनाई देती है। कवि अनुमान लगाता है कि वह मुख्य गायक के छोटे भाई की आवाज़ होगी या उसके शिष्य की या पैदल चलकर सीखने आने वाले दूर के किसी रिश्तेदार की।

Online Teaching With Nikita
Study Smart Be Bright

भावार्थ पाठ 6 - 'संगतकार' (मंगलेश डबराल)
कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 2

मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गंज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था।

भावार्थ:

संगतकार मुख्य गायक की आवाज में प्राचीन काल से ही अपनी गंज मिलाता आया है। वह मुख्य गायक को आधार प्रदान करता है उसके गायन की रिक्तता को भरता है।

जब मुख्य गायक स्थायी या टेक को छोड़कर अंतरे के रूप में बंदिश अर्थात गीत का अगला चरण पकड़ता है और कठिन तानों की सफलता पूर्वक प्रस्तुति करता है या अपने ही सरगम को लांघकर एक ऊँचे स्वर में खो जाता है, तब संगतकार ही गाने के स्थायी को पकड़े रहता है। यहाँ कवि ने गायन की उस स्थिति का वर्णन किया है, जहाँ मुख्य गायक गाते गाते अलौकिक आनंद में डूब जाता है और उसके पास बैठे श्रोताओं की अनुभूति भी नहीं रहती। उस स्थिति में संगतकार मुख्य गायक और श्रोता गण के मध्य सेतु का कार्य करता हुआ कार्यक्रम में चार चांद लगा देता है। उस समय ऐसा लगता है, जैसे मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान समेट रहा हो, जैसे वह उसे उसका बचपन याद दिला रहा हो, जब वह संगीत सीख रहा था।

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT

भावार्थ पाठ 6 - 'संगतकार' (मंगलेश डबराल)

कक्षा 10 हिंदी अ क्षितिज भाग 2 - पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 3

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को दादम बांधता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गया जा चुका राग
और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
या अपने सर को ऊंचा ना उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझी जानी चाहिए

भावार्थ:

- जब मुख्य गायक का गला तारसप्तक अर्थात ऊंचे स्वरों में गाते समय बैठने लगता है, प्रेरणा उसका साथ छोड़ने लगती है या उसका उत्साह कम होने लगता है, आवाज बुझने लगती है, तभी मुख्य गायक को सांत्वना देता हुआ कहीं से संगतकार का उच्च स्वर सुनाई देने लगता है। कभी-कभी मुख्य गायक को यह बताने के लिए कि वह अकेले नहीं है और जिस राग को गाया जा चुका है, उसे फिर से गाया जा सकता है, संगतकार अपने स्वर से उसका साथ देता है।

भावार्थ:

- इस प्रकार वह मुख्य गायक के उत्साह को बढ़ाता है। यह सब करते समय उसकी आवाज में एक हिचकिचाहट साफ सुनाई देती है। यह संगतकार की अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊंचा न उठाने उठाने की जो कोशिश है, उसे उसकी विफलता नहीं मानी जानी चाहिए, यह तो उसकी मान्यवियतां है। किसी भी क्षेत्र में नायक का साथ देने वाले ऐसे व्यक्तियों को कमजोर नहीं समझना चाहिए क्योंकि इन्हीं के बल पर दूसरे लोग सफलता प्राप्त करते हैं।

Online Teaching With Nikita

STUDY SMART BE BRIGHT